Atmaj

Academic Research Journal

An International Peer-Reviewed Research Journal

ISSN: 2348 - 9456

Impact Factor 5.450

Volume-XVIII, Issue -XXII, July-Dec. - 2022

Editor-In-Chief

Dr. Dilkhush Patel

Scanned with CamScanner

Content of the Table

Sr. No.	Title of the Paper	Author	Page No.
1	Physical stress and selfie behavior among college students	Hareshkumar Madevabhai Patel	1
2	INDIAN ENGLISH NOVEL BEFORE INDEPENDENCE	Mr. Mahendra Valand	4
3	CSR Mandatory Requirement and Expenditure Practices: Comparison of Tata Group Companies indexed in Nifty 50	Jyoti V Karia	8
4	DALRYMPLE'S DEPICTION OF INDIA IN HIS TRAVELOGUES	Nayna B. Jadav	15
5	USES OF TECHNOLOGY IN TEACHING & LEARNING	Vakhariya Anitaraj Mahendraprasad	18
6	भारतीय स्वाधीनता आंदोलन और वीरांगना झलकारी बाई	डॉ. विनोदकुमार जे. वणकर	22
7	भक्तिकाल : हिन्दी साहित्य का स्वर्णयुग	डॉ.आई.डी.वाघेला	25
8	साम्प्रत युगमें अथर्ववेद की उपादेयता	प्रा.डॉ.दीपक पी.जोषी	30
9	भारत में गंगा का पौराणिक महात्म्य	डॉ.रमेशकुमार रगनाथभाई पटेल	33
10	हिंदी कहानियों में नारी विमर्शः आत्मनिर्भरता के संदर्भ में	पटेल शीतलबहन दशरथभाई	37
11	'કાકાની શશી' નાટકમાં વર્તાતી પાશ્ચાત્ય સાહિત્યની અસર	પ્રા. જ્યોત્સનાબેન કે. ચૌધરી	42
12	આઠમા ધોરણના વિદ્યાર્થીઓ માટે શિક્ષણના માધ્યમ સંદર્ભે ગુજરાતી ભાષાશક્તિ કસોટીની સંરચના અને પ્રમાણીકરણ	કિરણકુમાર જી.પટેલ	46
13	મનુસ્મૃતિમાં દર્શાવેલ વિવાહના પ્રકારો - રામાયણયુગ સંદર્ભે	KIRAN S. TRIVEDI	48
14	સ્વાતંત્ર્યની વિવિધ ચળવળોમાં સ્વાતંત્ર્ય સેનાની અને સમાજસેવક તરીકે સ્વ. દયાળજીભાઈ	Dr. Komal G. Oza	54
15	कादम्बरी કથામાં નિરૂપિત કવિ બાણભટ્ટની વર્ણનકલા	Patel ChetnaKumari BhupendraBhai	58
16	અવિનાશ વ્યાસની નજરે રામ	Dr. Manju K. Kher	63
17	મહિલા કોલેજની છોકરીઓના લગ્ન જીવન પ્રત્યેના વલણનો અભ્યાસ	Nareshkumar D. Zala	66

Scanned with CamSca

18	માતા-પિતાની સામેલગીરીના સંદર્ભમાં તરુણોના નૈતિક વિકાસનો મનોવૈજ્ઞાનિક અભ્યાસ	Nisha. R. Chauhan	69
19	'અનુવાદ' એક વિશ્લેષણાત્મક પ્રક્રિયા	ડૉ. દિલીપકુમાર ઝેરાભાઈ ચૌહાણ	78
20	શ્રી શંકરલાલ વિરચિત 'અમરમાર્કણ્ડેયમ્' નાટકમાં દાર્શનિક ચિંતન - એક દ્રષ્ટિકોણ	ડૉ. મનોજકુમાર એલ. પ્રજાપતિ	83
21	" સુરેશ જોષી - સર્જક પ્રતિભા"	ડૉ. સી.એલ.પંચોલા	86
22	શ્રીમદ ભગવદગીતા અને યોગદર્શન	પ્રા. ડૉ. શૈલેષકુમાર કે. જાંબી	89
23	મણીલાલ હ.પટેલનું ચરિત્ર સાહિત્ય	કટારા જયોતિકાબેન એ	92
24	સરકારી યોજના અને મહિલા સશક્તિકરણ	ફાલ્ગુની પી. કણસાગરા	96
25	ભજનની વાણી	સુથાર દશરથભાઈ દલાજી	101
26	બનાસકાંઠા જિલ્લાની વાવો : એક અભ્યાસ	ભારતી કે. ચૌધરી	103
27	શ્રી. કેશવરામ કાશીરામ શાસ્ત્રીજીનું ગુજરાતના પુરાતત્વ ક્ષેત્રે પ્રદાન	દેસાઇ મિતેશકુમાર મનહરભાઇ	107
28	जयशेखरसूरी कृत जैनकुमारसंभव महाकाव्य के प्रमुख पात्रों का निरूपण	Prajapati Payalben Manubhai	111
29	COMPARATIVE STUDY ON SELECTED PHYSICAL FITNESS ABILITY VARIABLES AMONG DIFFERENT TEAM GAMES PLAYERS SCHOOL LEVELS	Mr. Gamit Sanjay	117
30	"A STUDY ON THE CONSUMER SATISFACTION TOWARDS ONLINE SHOPPING IN PALANPUR CITY"	Rahul M. Rathod	122
31	નવલકથા 'ચિહ્ન'ની નારી સંવેદના	રાજપુત લાલસિંગ ચંદનસિંગ	127
32	ભારતના ૧૫મા યુવા રાષ્ટ્રપતિઃ શ્રીમતિ દ્રૌપદી મુર્મુ	સંદિપભાઈ ડાહ્યાભાઈ પ્રજાપતિ	130
33	Green House Effect	Prof. Ramilaben K. Patel	133

Scanned with CamSca

Volume – XVIII Issue – XXII, July – Dec. - 2022

ISSN: 2348-9456
Impact Factor : 5.450

भारतीय स्वाधीनता आंदोलन और वीरांगना झलकारी बाई

डॉ. विनोदकुमार जे. बणकर
आदिवासी कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय संतरामपुर

भारतीय स्वाधीनता आंदोलन का इतिहास स्वाधीनता के लिए भारतीयों के संघर्ष की अद्भुत गाथा है। इस संघर्ष में पुरुषों और महिलाओं ने समान रूप से भाग लिया चाहे, घर हो, मोर्चा हो, राजनीति हो, रणक्षेत्र हो, महिलाओं ने जिस साहस, सहिष्णुता, वीरता से स्वतंत्रता आंदोलन में अपनी भूमिका निभाई वह इतिहास की धरोहर है। भारतीय वीरांगनाओं ने ब्रिटिश ताकतों से लोहा लेने के में कोई कसर नहीं छोड़ी है। स्वतंत्रता संग्राम की लड़ाई में पुरुष समाज के साथ कंधे-से- कंधा मिलाकर लड़ने वाली नारी की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। जब- जब देश को जरूरत पड़ी तब- तब तलवार हो या पिस्तौल चलाने में कभी भी हिचक नहीं दिखाई है।

भारतीय स्वाधीनता आंदोलन में राजाओं के साथ साथ रानियों का भी योगदान रहा है। राजा युद्ध जीतता है तो केवल राजा का ही योगदान नहीं होता कई लोगों का अहम योगदान होता है । इतिहास में ऐसे कई पात्र हैं जो दब गए हैं या दबाए गए हैं। ऐसा ही एक पात्र है -वीरांगना झलकारी बाई। स्वाधीनता आंदोलन में रानी लक्ष्मीबाई की सेना में वीरांगना झलकारी बाई का अहम योगदान रहा है। वीरांगना झलकारी बाई रानी लक्ष्मीबाई की सेना में 'दुर्गा दल' का नेतृत्व कर रही थी। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने वाली महिला सेनानियों में से कुछ नाम तो सब जानते हैं किन्तु कुछ नाम ऐसे भी हैं, जिनके बारे में इतिहास के पन्नों में केवल कुछ शब्द ही लिखे गए हैं, ऐसा ही एक नाम है वीरांगना झलकारी बाई । अतः इस पपत्र के ध्वारा झलकारी बाई के पात्र को उजागर करना ही मेरा मूल उद्देश्य रहा है।

झलकारी बाई का जन्म 22 नवंबर 1830 को झांसी के पास भोजला गांव में एक निर्धन कोली परिवार में हुआ था। झलकारी के पिता का नाम मूलचंद और माता का नाम धनिया था। जब झलकारी बाई बहुत छोटी थी तब मां का निधन हो गया था। उसके पिता ने उन्हे एक लड़के की तरह पाला था। उन्हे घुड़सवारी और हथियारों का प्रयोग करने में प्रशिक्षित किया गया था। उन दिनों की सामाजिक परिस्थितियों के कारण उन्हें कोई औपचारिक शिक्षा तो प्राप्त नहीं हो पाई, लेकिन उन्होंने खुद को एक अच्छे योद्धा के रूप में विकसित किया था । झलकारी बाई बचपन से ही बहुत साहसी और दृढ़ प्रतिज्ञ बालिका थी।

वीरांगना झलकारी बाई बचपन से ही वीर एवं बहादुर प्रकृति की थीं। उनमें नेतृत्वशीलता, उत्साह जैसे गुणों का अद्भुत संगम था । उनका जन्म दलित वर्ग की उपजाति कोरी में हुआ था। सन् 1843 में झलकारी का विवाह झांसी के 'पूरन कोरी' से कर दिया था। उनके पति 'पूरन कोरी' राजा गंगाधर राव के राज दरबार में एक मामूली सिपाही थे। झलकारी बाई अपने पति के पैतृक पेशे से जुड़ी होने के कारण घर पर कपड़ा बुनने का कार्य करती थीं। वह एक आदर्श बहादुर घरेलू नारी थीं। उनका पारिवारिक जीवन अत्यंत संघर्षमय था। झलकारी बाई ने अपने पति 'पूरन' से सैनिकों के सभी गुण सीख लिए थे चाहे वह तीर, तलवार या बंदूक चलाना हो या फिर घुड़सवारी। उनकी यही सैन्य शिक्षा झांसी के स्वतंत्रता संग्राम में काम आई।

" न धर्म रक्षा और न जाति रक्षा, झलकारी ने चूड़ियाँ पहनना छोड़ देश रक्षा के लिए बंदूक हाथ में ले ली थी। उसे न महल चाहिए थे, न कीमती जेवर और न रेशमी कपड़े और ना दुशाले। वह न तो रानी थी और न ही पटरानी। वह किसी सामन्त की बेटी भी नहीं थी तथा किसी जागीरदार की पत्नी भी नहीं। वह तो गाँव भोजला के एक साधारण कोरी परिवार में पैदा हुई थी और पूरन को ब्याही गई थी।" (1) पिता भी आम परिवार से थे और पति भी, लेकिन देश और समाज के प्रति प्रेम और बलिदान के कारण उन्होंने इतिहास में खास जगह बनाई थी।

Scanned with CamSca

झांसी से चार कोश की दूरी पर भोजला गाँव बसा था। उस समय ब्रिटिश साम्राज्य का राज्य चलता था। झांसी के लोगों के मन में केवल अंग्रेजो के खिलाफ क्रांति और संघर्ष की आग धधक रही थी। झलकारी बाई में बचपन से ही आक्रोश एवं वीरता दिखाई देती है, उसे बचपन से ही महल में रहने की, अपना खुद का किला हो वैसा सपना था। जब वह रेत के अंदर किला बनाती और अगर कोई उसके मित्र आकर उसमें बाधा डालते तो वह क्रोधित हो जाती थी। चन्ना, चमेली उनकी सहेलियाँ किला बनाने पर हँसी मजाक करती हैं तब वह कह उठती हैं कि - "अरे, हम राजा रानी से काय कम हैं।" [2] वहाँ उनके स्वर में आत्मविश्वास उभरकर सामने आता है।

एक बार ग्वालियर की सेना झांसी की ओर जा रही थी तभी उस सेना में एक सैनिक भोजला गाँव में पानी पीने के लिए रुका। उसने झलकारी को देखा तो वह उसे देखता ही रह गया और झलकारी के घर उसने पानी पिया। कई बार तो तोप के गोलों की आवाजों से भी गाँव के लोगों में दहशत फैल जाती थी मगर अब स्वयं ऐसे लंबे चौड़े बड़ी-बड़ी आँखों वाले सैनिक को देखकर सब भयभीत हो जाते हैं। उस सैनिक ने झलकारी के चेहरे के तेज को देखकर उसके मां-बाप से कहा था कि - "तुम्हारी बेटी बहुत बहादुर है । देखना एक दिन इतिहास में इसका नाम होगा। झांसी के दरबार में इसका आना जाना होगा । " [3] अतः यहाँ झलकारी बाई में निर्भयता दिखाई देती है। एक बार अपनी सहेलियों के साथ जंगल में लकड़ियाँ लेने जाती हैं तब वहाँ बाघ से सामना होता है और उसे कुल्हाड़ी से मार डालती है बचपन से वह निर्भय एवं बहादुर रही हैं।

हल्दी कुमकुम उत्सव महाराष्ट्रीयन में बहुत उत्साह के साथ झांसी में मनाया जाता था। इस अवसर पर सारी औरतों को अपने महल में पूजा के लिए बुलायी जाती थी। इसी क्रम में झलकारी भी अपने विवाह के बाद इस अवसर पर रानी के महल पहुँच जाती है तब रानी मुस्कुराती हुई झलकारी से पूछती है-

"कौन हो? उतर मिला
सरकार हो तो कोरिन
पर नाम क्या है तुम्हारा?
झलकारी दुलैया"[4]

यह रानी से पहली मुलाकात थी झलकारी की। इस मुलाकात से इतिहास के पन्ने खुलने लगे थे। झांसी के राज्य को संभालने की जिम्मेदारी जब रानी पर आ गई तो उसकी रक्षा के लिए रानी ने खुद अपनी सेना तैयार की थी। जिसमें झलकारी को औरतों की सेना की कमांडर बना दिया। जिससे दलितों में आत्मस्वाभिमान की भावना उभर रही थी। झांसी में जब आकाश तेजी के साथ खून के रंग बदलते दिखाई दे रहा था। हर समय झलकारी भी अपने पति और सेना के साथ युद्ध करने के लिए तत्पर ही रही थी। सन् 1857 को झांसी में विद्रोह भड़क उठा था। झांसी में अंग्रेजों के सीने पर विद्रोहियों की यह जोरदार दस्तक थी। झलकारी और उसके पति को पूरे जोश के साथ अंग्रेजों का सामना करते देख रानी अति प्रसन्न हुई थी। झलकारी के अंदर धीरता और वीरता का अनोखा संगम था। झांसी को अंग्रेजों के चुगल से छुड़ाने में दुश्मनों की लाशों का ढेर लगा दिया था। झलकारी बाई का रूप रंग रानी लक्ष्मीबाई से मिलता-जुलता था। परिणाम स्वरूप झलकारी ने अपनी शक्ल का फायदा उठाकर रानी को सुरक्षित स्थान पर पहुँचा दिया था। झलकारी की शक्ल रानी से काफी मिलती-जुलती थी जिसके कारण खुद अंग्रेज भी धोखा खा गए थे। रानी ने युद्ध के साथ कई निर्दोष लोगों की लाश भी देखी थी जिसमें से एक झलकारी का पति 'पूरन' भी था। झांसी की सड़कों पर बह रहा खून का दृश्य रानी ने देखा था। झलकारी ने रानी को तो बचा लिया मगर किसी अपने ही गद्दार सैनिक के कारण पकड़ी जाती है। अंग्रेज सैनिक जब झलकारी को गोली से उड़ा देने की बात करता है तो वह निडर होकर कहती है कि मारनी है तो मार दो गोली मुझे मौत से डर नहीं लगता और झलकारी की ऐसी वीरता और तेज देखकर सेनापति झलकारी को छोड़ देता है। अंत में वह हर हालत में झांसी को हांसिल करना चाहती है। अतः संघर्ष की ऐसी भयंकर स्थिति में भी झलकारी बाई संतुलित थी उनमे वीरता और धीरता का अनोखा संगम था।

Scanned with CamScanner